हरिवंश राय बच्चन

वर्ष 1935 में हिंदी कविता के आकाश पर चमकते सितारे की तरह छा जाने वाले बच्चन को हिंदी का उमर खय्याम और जन कवि भी कहा गया है | उन्होंने लगभग एक लाख चिट्ठियां अपने चहेते प्रशंसकों को लिखीं, जो समय के साथ विशिष्ट साहित्यिक धरोहर बन गई हैं | उनकी आत्मकथा **क्या भूलूं क्या याद करूं** साहित्य जगत में बेमिसाल मानी जाती है | उनका जन्म 27 नवम्बर, 1907 को इलाहाबाद के नजदीक प्रतापगढ़ जिले के एक छोटे-से गांव पट्टी में एक साधारण मध्यवर्गीय कायस्थ परिवार में हुआ था | ये प्रताप नारायण श्रीवास्तव और सरस्वती देवी के बड़े पुत्र थे | उनकी उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई | वर्ष 1925 में हाई स्कूल पास किया तथा 1929 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की |

कई तरह की नौकरियां करने के बाद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 1941 से 1952 के दौरान अंग्रेजी पढ़ाई | इसके बाद वे शोध के लिए कैम्ब्रिज गए, जहां उन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि ली | भारत लौटने पर एक साल तक प्रोड्यूसर के पद पर कार्य करने के बाद 1955 में वे विदेश मंत्रालय में विशेष अधिकारी (हिंदी) के तौर पर नियुक्त हुए और 10 साल तक इस पद पर कार्य किया | बच्चन जी सरल भाषा में लिखने पर बड़ा जोर देते थे| जितनी सरल बात होगी, उतनी ही लोगों को समझ आएगी | सरल लिखने के लिए सरल होना बड़ा जरूरी है | बच्चन ने बोलचाल की भाषा का कविता में प्रवेश कराया |

उनकी प्रमुख रचनाएं -

कविता संग्रह तेरा हार, मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, हलाहल, बंगाल का काव्य, खादी के फूल, सूत की माला, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, धार के इधर-उधर, आरती और अंगारे, बुद्ध और नाचघर, त्रिभंगिमा |

आत्म कथा क्या भूलूं क्या याद करूं, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सौपान तक|

अनुवाद खैयाम की मधुशाला, मैकबेथ, जनगीता, ओथेलो, उमर खैयाम की रूबाइयां, मरकत द्वीप का स्वर, नागर गीत, हेमलेट, नेहरू-राजनीतिक जीवन चरित्र, चौंसट रूसी कविताएं, भाषा अपनी भाव पराए, प्रवास की डायरी, किंग लियर |

निबंध चार खेमें चौंसठ खूंटे, नए-पुराने झरोखे, टूटी-छूटी कड़ियां,

वर्ष 1966 में हिंदी साहित्य जगत में अपने अविस्मरणीय योगदान के लिए उन्हें राज्य सभा में मनोनीत किया गया | उन्हें पद्मभूषण (1976), के.के.बिरला फाउंडेशन के पहले सरस्वती सम्मान,

साहित्य अकादमी पुरस्कार (1969), सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, और एफ्रोएशियन राइटर्स कांफ्रेंस के लोट्स पुरस्कार और हिंदी साहित्य सम्मेलन साहित्य वाचस्वति सम्मान भी मिला |

उत्तर-छायावादी युग के आखिरी स्तंभ और हालावाद के प्रवर्तक कवि हरिवंश राय बच्चन जुहू स्थित अपने निवास प्रतीक्षा में 18 जनवरी, 2003 उन्होंने 96 साल की आयु में अंतिम सांस ली | लेकिन वे साहित्याकाश में आज भी विद्यमान हैं |